PUBLIC SCHOOL DARBHANGA

सत्र (२०२०-२१)

हिंदी

हिमालय की बेटियां

प्रश्न-अभ्यास

लेख से

1. नदियों को माँ मानने की परंपरा हमारे यहाँ काफ़ी पुरानी है। लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें और किन रूपों में देखते हैं?
2. सिंधु और ब्रह्मपुत्र की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?
3. काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है?
4. हिमालय की यात्रा में लेखक ने किन-किन की प्रशंसा की है?

लेख से आगे

1. नदियों और हिमालय पर अनेक कवियों ने कविताएँ लिखी हैं। उन कविताओं का चयन कर उनकी तुलना पाठ में निहित नदियों के वर्णन से कीजिए।
2. गोपालसिंह नेपाली की कविता 'हिमालय और हम', रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'हिमालय' तथा जयशंकर प्रसाद की कविता 'हिमालय के आँगन में' पढ़िए और तुलना कीजिए।
3. यह लेख 1947 में लिखा गया था। तब से हिमालय से निकलनेवाली नदियों में क्या-क्या बदलाव आए हैं?
4. अपने संस्कृत शिक्षक से पूछिए कि कालिदास ने हिमालय को देवात्मा क्यों कहा है?

अनुमान और कल्पना

1. लेखक ने हिमालय से निकलनेवाली नदियों को ममता भरी आँखों से देखते हुए उन्हें हिमालय की बेटियाँ कहा है। आप उन्हें क्या कहना चाहेंगे? नदियों की सुरक्षा के लिए कौन-कौन से कार्य हो रहे हैं? जानकारी प्राप्त करें और अपना सुझाव दें।
2. नदियों से होनेवाले लाभों के विषय में चर्चा कीजिए और इस विषय पर बीस पंक्तियों का एक निबंध लिखिए।

लेख से

1

नदियों को माँ मानने की परंपरा भारतीय संस्कृति में अत्यंत पुरानी है। नदियों को माँ का स्वरुप तो माना ही गया है लेकिन लेखक नागार्जुन ने उन्हें बेटियों, प्रेयसी व बहन के रूपों में भी देखते है।

2

सिंधु और ब्रह्मपुत्र हिमालय की दो ऐसी नदियाँ हैं जिन्हें ऐतिहासिकता के आधार पर पुल्लिंग रूप में नद भी माना गया है। इन्हीं दो नदियों में सारी नदियों का संगम भी होता है। प्राकृतिक और भौगोलिक दृष्टि से भी इनकी महत्ता है। कहा जाता है कि ये दो ऐसी नदियाँ हैं जो दयालु हिमालय की पिघले हुए दिल की एक-एक बूँद से निर्मित हुई हैं। इनका रूप विशाल और विराट है। इनका रूप इतना लुभावना है कि सौभाग्यशाली समुद्र भी पर्वतराज हिमालय की इन दो बेटियों का हाथ थामने पर गर्व महसूस करता है।

3

नदियाँ युगों-युगों से मानव जीवन के लिए कल्याणकारी रहीं है। ये युगों से एक माँ की तरह हमारा भरण-पोषण करती है। इनका जल भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ाने में विशेष भूमिका निभाता है। इसलिए नदियाँ माता के समान पवित्र एवं कल्याणकारी है। मानव नदी को दूषित करने के में कोई कसर नहीं छोड़ता परन्तु इसके बावजूद भी अपार दुःख सहकर भी इस प्रकार का कल्याण केवल माता ही कर सकती है। अत: काका कालेलकर ने नदियों की माँ समान विशेषताओं के कारण उन्हें लोकमाता का दर्जा दिया है।

4

हिमालय की यात्रा में लेखक ने हिमालय की अनुपम छटा की, नदियों की अठखेलियों की, बरफ से ढँकी पहाड़ियों की, पेड़-पौधों से भरी घाटियों की, देवदार, चीड, सरो, चिनार, सफैदा, कैल से भरे जंगलों की प्रशंसा की है।

लेख से आगे

1.

निर्झरिणी

मधु-यामिनी अंचल-ओट में सोयी थी
बालिका-जुही उमंग-भरी,
विधु-रंजित ओस कणों से भरी
थी बिछी वन-स्वान-सी दूब हरी।
मृदु चाँदनी बीच थी खेल रही
वन-फूलों के शून्य में इन्द्र-परी,
कविता बन शैल-महाकवि के
उर से मैं तभी अनजान झरी।
हिरणी-शिशु ने निज उल्लास दिया
मधु राका ने रूप दिया अपना,
कुमुदी ने हँसी, परियों ने उमंग
चकोरी ने प्रेम में यों तपना।
जननी-धरणी मुझे गोद लिए
थी सचेत कि मैं भाग जाऊँ नहीं
वन जन्तुओं के शिशु आन जुटे
कि सखा बिन मैं दुख पाऊँ नहीं
थी डरी मैं, पड़ी ममता में कहीं
इस देश में हीं रह जाऊँ नहीं,
प्रिय देश देखे बिना झर जाऊँ न व्यर्थ
कहीं छवि यों हीं गवाऊँ नहीं।

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

दिनकर की कविता में नदी के धरती पर उतरने का वर्णन है और नागार्जुन के निबंध में हिमालय पर नदियों के बालपन का वर्णन है। देखा जाए तो दिनकर के विचार नागार्जुन की सोच को आगे बढ़ाते नजर आते हैं। हिमालय की बेटियाँ पहाड़ों से उतर कर धरती की गोद में गिरती हैं तो माँ धरती उसे थामने की चेष्टा करती हैं, परंतु नदियाँ उनसे भी दामन छुड़ा कर अपने प्रिय से मिलने के लिए आगे बढ़ जाती हैं।

2.

हिमालय

मेरे नगपति! मेरे विशाल।
साकार, दिव्य, गौरव विराट।
पौरुष के पूंजीभूत ज्वाल।
मेरी जननी के हिम-किरीट।
मेरे भारत के दिव्य भाल।
मेरे नगपति! मेरे विशाल।
युग-युग अजेय, निर्बन्ध मुक्त
युग-युग गर्वोन्नत, नित महान
निस्सीम व्योम में तान रहा
युग से किस महिमा का वितान।
कैसी अखण्ड यह चिर-समाधि?
यतिवर! कैसा यह अमर ध्यान?
तू महा शून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान?
उलसन का कैसा विषम जाल
मेरे नगपति मेरे विशाल!
ओ, मौन तपस्या-लीन यही।
पल-भर को तो कर दृगोन्मेष।
रे ज्वालाओं से दग्ध-विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश।
सुखसिन्धु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,
गंगा-यमुना की अमियधार
जिस पुण्य भूमि की ओर बही
तेरी विगलित करुणा उदार।
मेरे नगपति! मेरे विशाल।

–रामधारी सिंह 'विनकर'

उपर्युक्त कविता की तुलना यदि नागार्जुन द्वारा लिखित निबंध से करें तो पाएँगे कि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी कविता में हिमालय की विशालता का वर्णन किया है। उसे भारत के मस्तक तथा मुकुट के रूप में दर्शाया है। उसकी महिमा का बखान किया है क्योंकि वह युगों से अपने स्थान पर अडिग और अचल खड़ा है। दिनकर ने हिमालय को चिर समाधि में लीन होकर किसी समस्या का निदान ढूँढते हुए बताया है। वही नागार्जुन ने अपने निबंध में हिमालय का चित्रण नदियों के पिता के रूप में किया है, जो अपनी नटखट बेटियों के कारण सिर धुनता रहता है।

3.

1947 के बाद से आज तक नदियाँ उसी प्रकार हिमालय से बहती हुई आ रही हैं लेकिन जनसंख्या वृद्धि और बड़ी संख्या में प्रदूषण के कारण नदियों का जल पहले की तरह स्वच्छ और निर्मल नहीं रहा। गंगा जैसी पवित्र मानी जाने वाली नदी के जल की गुणवत्ता में भी भारी कमी आई है। यही नहीं नदियों में जल का प्रवाह भी कम हुआ है। यह स्थिति मानव जाति के लिए हानिकारक है।

4.

स्वर्ग से संबद्ध स्थानों में हिमालय का प्रमुख स्थान है। इसे देवताओं का निवास स्थल भी माना गया है, इसलिए कालिदास ने हिमालय को देवात्मा कहा है।

अनुमान और कल्पना

1.

नदियाँ हिमालय की बेटियाँ है, परंतु मानव जाति के लिए तो वह माँ समान ही हैं। फिर भी यदि कोई और रिश्ता हम उनके साथ जोड़ना चाहें तो उन्हें अपना मित्र मान सकते हैं। एक सच्चे मित्र की भाँति नदियाँ सदा हमारी हितैषी रही हैं और उन्होंने भलाई ही की है। हम नदियों की मित्रता का सही मूल्य नहीं चुका सके हैं और उसे बार-बार दूषित किया है। यदि समय रहते हमने अपनी गलतियाँ नहीं सुधारी तो परिणाम भयानक होंगे और मानव जाति को इसका मूल्य चुकाना होगा।
नदियों की सुरक्षा के लिए हमारे देश में कई योजनाएँ बनाई जाती रही हैं परंतु आज आवश्यकता इस बात की है कि हम शीघ्र ही गंभीरतापूर्वक इन योजनाओं पर अमल करना शुरू कर दें। नदियों के सफाई की उचित व्यवस्था की जाए। उनमें कचड़े फेंकने पर रोक लगाई जाए, कल-कारखानों से निकलने वाले दूषित जल व रसायन तथा शव प्रवाहित करने पर रोक लगाई जाए। तभी हम नदियों को बचा पाएँगे।

2.

नदियाँ आदिकाल से ही लाभप्रद रही हैं। मानव जाति के विकास में नदियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नदियों के किनारे ही प्राचीन सभ्यताओं का विकास हुआ। मानव ने नदी किनारे ही पहली बार बसना शुरू किया। नदी किनारे उसने खेती करना शुरू किया क्योंकि सिंचाई के लिए सरलता से जल वही मिल सकता था। इतिहास की किताबें पलट कर देखें तो पाएँगे कि बड़े-बड़े शहर तथा साम्राज्य किसी न किसी बड़ी नदी के किनारे ही स्थापित किए गए। नदियाँ आवागमन तथा व्यापार का माध्यम हुआ करती थीं। साथ ही नदी की सीमा होने से शत्रुओं से रक्षा भी हो जाती थी क्योंकि सेना लेकर नदी पार करना सरल नहीं था। आधुनिक युग में भी नदियों का महत्व कम नहीं हुआ अपितु बढ़ा ही है। नदियाँ आज भी जल तथा सिंचाई का सबसे बड़ा श्रोत हैं। नदियों से नहरें निकाल कर गाँव-गाँव में यह साधन उपलब्ध कराया गया है। नदियों पर बाँध बनाए गए हैं, उनसे बिजली तैयार की जा रही है। इस प्रकार नदियों ने रोजगार भी दिए हैं तथा आधुनिकीकरण में अपना योगदान भी दिया है।
उपर्युक्त आधार पर छात्र चर्चा करें और अपने विचार लिखें।